हरिकथामृथसार
विघ्नेश्वरस्तोत्र संधि

हरिकथामृथसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पेळुवे
परम भगवध्भक्थरिधनाधरधि केळुवुधु

श्रीशनंघ्रि सरोजभृंग म
हेशसंभव मन्मनदोळु प्र
काशिसनुदिन प्राथिसुवे प्रेमातिशयदिंद
नी सलहु सज्जनर वेद
व्यास करुणापात्र महदा
काशपति करुणाळु कैपिडिदेम्मनुद्धरिसु २८-०१

ऐकदंत इभेंद्रमुख चा
मीकरकृत भूषणांग कृ
पा कटाअदि नोडु विज्झन्यापिसुवेनिनितेंदु
नोकनीयन तुतिसुतिप्प वि
वेकिगळ सहवास सुखगळ
नी करुणिसुवुदेमगे संतत परमकरुणाळु २८-०२

विघ्नराजने दुविषयदोळु
मग्नवागिह मनवु महदो
षघ्नंघ्रि सरोजयुगळदि भक्तिपूवकदि
लग्नवागलि नित्य नरक भ
याग्निगळिगानंजे गुरुवर
भग्नगैसेन्नवगुणगळनु प्रतिदिवसदल्लि २८-०३

धनप विश्वक्सेन वैद्या
श्विनिगळिगे सरियेनिप षण्मुख
ननुज शेषशतस्थ देवोत्तम्म वियद्गंगा
विनुत विश्वोपासकने स

न्मनदि विज्ञ्न्यापिसुवे लकुमी
वनितेयरसन भक्तिज्ञ्न्यानव कोट्टु सलुहुवुदु २८-०४

चारुदेष्णाह्वयनेनिसि अव
तार माडिदे रुक्मिणीयलि
गौरियरसन वरदि उद्भटराद राअसर
शौरियाज्ञ्न्यदि संहरिसि भू
भारविळुहिद करुणि त्वत्पा
दारविंदके नमिपे करुणिपुदेमगे सन्मतिय २८-०५

शूपकणद्वय विराजित कं
दपशर उदिताकसन्निभ
सपवर कटिसूत्र वैकृतगात्र सुचरित्र
स्वपितांकुश पाशकर खळ
दभंजन कमसाइग
तपकनु नीनागि तृप्तिय पडिसु सज्जनर २८-०६

खॆश परम सुभक्तिपूवक
व्यासकृत ग्रंथगळनरितु प्र
यासविल्लदॆ बरेदु विस्तरिसिदेयो लॊकदोळु
पाशपाणिये प्राथिसुवेनुप
दॆशिसेनगदरथगळ करु
णासमुद्र कृपाकटाअदि नॊडुव प्रतिदिनदि २८-०७

श्रीशनतिनिमल सुनाभी
दॆशवस्थित रक्त गंधा
तिशॊभितगात्र लॊकपवित्र सुरमित्र
मूषकसुवरवहन प्राणा
वॆशयुत प्रख्यात प्रभु पू
रैसु भक्तरु बॆडिदिष्टाथगळ प्रति दिनदि २८-०८

शंकरात्मज दैत्यरिगति भ
यंकरगतिगळीय लॊसुग
संकट चतुथिगनेनिसि अहिताथगळ कोट्टु
मंकुगळ मोहिसुवे चक्रद
रांकितन दिनदिनदि त्वत्पद
पंकजगळिगे बिन्नैसुवेनु पालिपुदु एम्म २८-०९

सिद्ध विद्याधरगण समा
राध्य चरणसरोज सवसु
सिद्धिदायक शीघ्रदिं पालिपुदु बिन्नपव
बुद्धि विद्य ज्ङ्न्यान बल परि
शुद्ध भक्ति विरक्ति निरुतन
वद्यन स्मृतिलीलेगळ सुस्तवन वदनदलि २८-१०

रक्तवासद्वय विभूषण
उक्ति लालिसु परमभगव
द्भक्तवर भव्यात्म भागवतादिशास्त्रदलि
सक्तवागलि मनवु विषय
विरक्ति पालिसु विध्वधाध्य वि
मुक्तनेंदेनिसेन्न भवभयदिंदलनुदुनदि २८-११

शुक्र शिष्यर संहरिपुदके
शक्र निन्ननु पूजिसिदनु उ
रुक्रमश्रीरामचंद्रनु सेतुमुखदल्लि
चक्रवतिप धमराजनु
चक्रपाणिय नुडिगे भजिसिद
वक्रतुंडने निन्नोळेंतुटो ईशनुग्रहवु २८-१२

कौरवेंद्रनु निन्न भजिसद
कारणदि निजकुल सहित सं
हार ऐदिद गुरुवर वृकोदरन गदेयिंद

तारकांतकननुज एन्न
शरीरदोळु नीनिंतु धम
प्रेरकनु नीनागि संतैसेन्न करुणदलि २८–१३

ऐकविंशति मोदक प्रिय
मूकरनु वाग्मिगळ माळ्पे कृ
पाकरेश कृतज्झन्य कामद कायो कैपिडिदु
लेखकाग्रणि मन्मनद दु
व्याकुलव परिहरिसु दयदि पि
नाकि भाया तनुज मृद्भव प्राथिसुवे निन्न २८–१४

नित्य मंगळ चरित जगदु
त्पत्तिस्थिति लय नियमन ज्झन्या
नत्रयपद बंधमोचक सुमनसासुर
चित्तवृत्तिगळंते नडेव प्र
मत्तनल्ल सुहृज्जनाप्तन
नित्यदलि नेनेनेनेदु सुखिसुव भाग्य करुणिपुदु २८–१५

पंचभेद ज्झन्यानवरुपु वि
रिंचिजनकन तोरु मनदलि
वांछितप्रद ओलुमेयिंदलि दासनेंदरिदु
पंचवक्त्रन तनय भवदोळु
वंचिसदे संतैसु विषयदि
संचरिदंददलि माडु मनादिकरणगळ २८–१६

ऐनु बेडुवुदिल्ल निन्न कु
योनिगळु बरलंजे लकुमी
प्राणपति तत्वेशरिंदोडगूडि गुणकाय
ताने माडुवनेंब ई सु
ज्झन्यानवने करुणिसुवुदेमगे म
हानुभाव मुहुमुहुः प्राथिसुवेनिनितेंदु २८–१७

नमॊ नमॊ गुरुवय विबुधॊ
त्तम विवर्जितनिद्र कल्प
द्रुमनेनिपे भजकरिगे बहुगुणभरित शुभचरित
उमेय नंदन परिहरिस
हंममते बुद्ध्यादिं द्रियगळा
क्रमिसि दणिसुतलिहवु भवदोळगाव कालदलि २८–१८

जयजयतु विघ्नेश ताप
त्रयविनाशन विश्वमंगळ
जयजयतु विद्याप्रदायक वीतभयशोक
जयजयतु चावांग करुणा
नयनदिंदलि नॊडि जनुमा
मय मृतिगळनु परिहरिसु भक्तरिगे भवदोळगे २८–१९

कडुकरुणि नीनेंदरिदु हे
रोडल नमिसुवे निन्नडिगे बें
बिडदे पालिसु परम करुणासिंधु एंदेंदु
नडु नडुवे बरुतिप्प विघ्नव
तडेदु भगवन्नाम कीतने
नुडिदु नुडिसेंनिंद प्रति दिवसदलि मरेयदले २८–२०

ऎकविंशति पदगळेनिसुव
कॊकनद नवमालिकेय मै
नाकितनयांतगत श्रीप्राणपतियेनिप
श्रीकरजगन्नाथविठ्ठल
स्वीकरिसि स्वगापवगदि
ता कोडुव सौख्यगळ भक्तरिगाव कालदलि २८–२१